svAnubhUtiprakAshikA

स्वानुभूतिप्रकाशिका

Document Information

Text title : svAnubhUtiprakAshikA

File name : svAnubhUtiprakAshikA.itx

Category : major_works, sadAshivabrahmendra

Location : doc_z_misc_major_works

Author : Sadashivendra Sarasvati

Proofread by : Sunder Hattangadi

Latest update : December 2, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

March 24, 2024

sanskritdocuments.org

स्वानुभूतिप्रकाशिका

गौरीपतिपदभजनक्रकचविलूनैकविषयपाशोऽहम् ।
देशिकवरकरुणोदितपरजीवात्मैक्यतत्त्वबोधोऽहम् ॥ १॥

प्रशमितनिजमायोऽहं प्रगलितजगदीशजीवभेदोऽहम् ।
प्रत्यगभिन्नपरोऽहं प्रविततसुखपूर्णसंविदेवाहम् ॥ २॥

समुदस्ताश्रमकोऽहं विध्वस्ताशेषविधिनिषेधोऽहम् ।
अस्तमिताहन्तोऽहं निस्तुलदृग्रूपवस्तुमात्रोऽहम् ॥ ३॥

साक्ष्यहमनपेक्षोऽहं पक्षविपक्षादिभेदविधुरोऽहम् ।
सूक्ष्मोऽहमक्षरोऽहं मोक्षानन्दैकसिन्धुरेवाहम् ॥ ४॥

कूटस्थचेतनोऽहं कुक्षिस्थानेकलोककलनोऽहम् ।
एकोऽहमविकलोऽहं केवलसन्मात्रसारभूतोऽहम् ॥ ५॥

वेद्योऽहमागमान्तैराद्योऽहं सकलभुवनहृद्योऽहम् ।
विभुरहमनवद्योऽहं शुभतरभावोऽहमप्रभेद्योऽहम् ॥ ६॥

शुद्धोऽहमद्वयोऽहं बुद्धो मुक्तोऽहमद्भुतात्माहम् ।
शोधितपरतत्त्वोऽहं बोधानन्दैकमूर्तिरेवाहम् ॥ ७॥

शान्तोऽहमान्तरोऽहं सन्ततभातोऽहमन्तकारोऽहम् ।
शमितान्तत्रितयोऽहं शाश्वतविज्ञानसमरसात्माहम् ॥ ८॥

अजरोऽहमव्ययोऽहं निजमहमनिशं स्थितोऽहमचलोऽहम् ।
अवबोधैकरसोऽहं कविवरसंसेव्यकेवलात्माहम् ॥ ९॥

निस्त्रैगुण्यपदोऽहं निष्क्रियधामाहमप्रतर्क्योऽहम् ।
निरवयवोऽहमजोऽहं निर्मलनिर्वाणमूर्तिरेवाहम् ॥ १०॥

निरवधिनिजबोधोऽहं निरुपमनिःसीमसत्त्वमात्रोऽहम् ।
परमानन्दघनोऽहं परशिव एवाहमनिशमभयोऽहम् ॥ ११॥

इति श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वत्या विरचिता स्वानुभूतिप्रकाशिका समाप्ता ।

Proofread by Sunder Hattangadi

svAnubhUtiprakAshikA

pdf was typeset on March 24, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*